

u. s. w.): कृतस्य पन्थानमन्वेतवा उ R. V. 7, 44, 5. 63, 5. 10, 33, 6. अनु ध-
न्वना यति वृष्टयः 5, 53, 6. नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः 7, 33, 8. 1,
163, 12. 10, 142, 5. आदित्यं वा अस्तंयत्तं सर्वं देवा अनुयति ÇAT. Br. 11, 6,
2, 4. 5, 1, 4. 11. 6, 4, 4. 13. 8, 2, 3, 5. अन्वेति पन्थाम्, गावो नो अन्थानन्वेतु
पूषा TAHT. Br. 3, 1, 2, 12. न हि मे क्रममाणाया निरालम्बे विकल्पसि । स-
मर्थो गतिमन्वेतुं वायुरपि R. 6, 10, 4. गच्छतः पृष्ठतो ऽन्विष्यात् M. 4, 154.
MBh. 3, 792. तं ब्रह्मन्तम् — अन्वीयुरनुसारिणः R. 1, 33, 18. पौराश्च पुरुष-
व्याघ्रानन्वियुः MBh. 1, 5738. सीता चान्वेतु मां वनम् R. 2, 34, 23. चीरा-
ण्येवानुयुक्तु मे 37, 4. शुनीमन्वेति आ BHALTR. 1, 63. RAGH. 1, 90. यत्रा-
न्वयसि राघवम् R. 3, 51, 13. अन्वियामीह भर्तारमहं प्रेतवर्षं गतम् MBh.
1, 4889. pass.: अन्वीयमानो राज्ञा R. 1, 17, 13. 2, 96, 21. — 2) hinter Etwas
her sein, an Etwas Theil nehmen; pass.: अन्वीयतामयं वीराः स्वपेवरः (v. 1.
अनुभूयताम्) N. (Bopp) 2, 9. — 3) suchend nachgehen, aufsuchen: पूषा गा
अन्वेतु नः R. V. 6, 34, 5. अनु व्रातास्तस्य सर्वं सृष्टमीयुः 1, 163, 8. ÇAT. Br. 12,
8, 1, 6. एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म यदेकारस्तस्माद्द्वन्द्वानितेनैवायत-
नेनैकारमन्वेति PRAÇNOP. 5, 2. — 4) sich nach Etwas richten, folgen
(gehörchen): अनु व्रतं वरुणो यति मित्रः R. V. 4, 13, 2. मम देवोसो अनु के-
तमायन् 25, 2. 8, 88, 6. 10, 6, 7. AV. 6, 89, 2. 19, 4, 4. येषामश्रेया अनुयति
कामम् TAHT. Br. 3, 1, 4, 7. यामामपाठा अनुयति कामम् 2, 4. धातुरादशम-
न्वेति MBh. 3, 1143. यश्चित्तमन्वेति परस्य 2, 2114. — 5) anheimfallen
(als Erbe): तन्मां पितृर्गोतमादन्विषाय R. V. 4, 4, 11. — partic. अन्वित 1)
begleitet, umgeben, verbunden mit, erfüllt, versehen, ausgestattet, begabt,
ergriffen, heimgesucht; die Ergänzung im instr. oder im comp. voran-
gehend Nir. 1, 12. अमात्यैरीदशैस्तु राज्ञा दशार्थो ऽन्वितः R. 1, 7, 16. अ-
न्वितो धातुभिः PAÑKAT. III, 238. अ्यातस्त्री चन्द्रिकायान्विता AK. 1, 1, 3, 5.
अमात्यपुत्रैः सवयोभिरन्वितः mit RAGH. 3, 28. सचिवा° Vid. 52. कुला-
न्वित von guter Familie PAÑKAT. I, 466. किंनो° III, 37. गुणा° ÇVETĀÇV.
Up. 6, 4. M. 2, 30, 247. लक्षणा° 3, 4, 4, 68. 7, 77. शमा° Muṇḍ. Up. 1, 2, 13.
नुधयान्वितः N. 9, 18. नुत्तृषा° 27. विस्मया° 3, 16. 5, 39. वरा° Viçv. 11,
22. विनया° 2, 10. R. 3, 20, 3. — M. 2, 31. 3, 202. 5, 128. 7, 32, 77. N. 11,
20, 35. 19, 19. 26, 28. Viçv. 9, 22. R. 1, 4, 6, 20, 31. 5, 21. 6, 13. 17, 14. Vid.
251. AK. 1, 1, 5, 3. H. 300, 522. — 2) der da verfolgt (einen Weg, eine
Richtung): तन्मार्गमन्विते तस्मिन्वाघवे R. 3, 40, 31. — 3) nachgeahmt,
wiedergegeben: तत्रापि तस्या लावण्यं रेखया (durch die Zeichnung)
किंचिदन्वितम् ÇĀK. 141. — 4) in einer logischen Verbindung mit Etwas
anderm stehend Nir. 2, 1. वर्षाः पदं प्रयोगार्हानन्वितैकार्यबोधकाः Siu.
D. 9, 15. सेपदिस्तु न गृह्यते ऽनन्वितार्थत्वात् P. 3, 1, 40, Sch. Vgl. u. अनु-
षङ्ग 6. und अन्वय.

— समनु partic. समन्वित 1) = अन्वित 1): सचिवैर्धातुभिश्च समन्वितः
R. 1, 4, 26. 2, 68, 2. 3, 1, 12. 43, 18. नानायुध° 1, 5, 10. ब्रह्मवृत्त° M. 7, 76.
वनं व्याग्रगैः समन्वितम् PAÑKAT. V, 21. ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधियज्ञस-
मन्विताः M. 2, 86. व्योत्रप° 8, 182. शौरिण PAÑKAT. III, 53. विनयेन R. 1,
30, 7. अद्वा° M. 3, 275. सुखदुःख° 1, 49. शोक° R. 4, 8, 52. कालसमन्वित
gestorben 2, 63, 16. — ÇVETĀÇV. Up. 5, 8. M. 2, 32. 3, 263. N. 3, 24. 6, 5.
11, 2. 12, 43. 69. 18, 20. 19, 13. 14. 18. 20. R. 1, 1, 14. 2, 21. 4, 6. 9, 6. 2.
32, 31. 3, 1, 4. 51, 36. 42. Viçv. 4, 13. 8, 1. 12, 23. 14, 1. PAÑKAT. I, 206. 38, 10.
62, 25. — 2) sich im Gefolge befindend, sich anschliessend: समन्वितलप-
स्तेकतालः AK. 1, 1, 3, 3.

— अन्तर 1) dazwischentreten: दुर्दृक् उपमृत्यान्तरयति MĀKĪ. 33, 11.
— 2) Jmd den Weg vertreten, abschneiden, von Etwas ausschliessen
(mit dem acc. der Person und abl. der Sache); übergēhen: देवा वै यज्ञा-
द्द्रुमन्तरायन् TS. 2, 6, 8, 3. 3, 1, 2, 3. 2, 3, 4. यो वा अर्धयुश्च यर्गमानश्च देव-
तामन्तरितस्तस्या आ वृष्टयेते 5, 9, 1. 5, 7, 26, 1. इदं वै मां सामादन्तरयति ÇAT.
Br. 1, 6, 3, 7. रात्रिरेनं तदन्तरियात् 3, 2, 2, 27. AIT. Br. 1, 2, 3. यत्प्रयाजानन्तरि-
यात् 11. ज्येष्ठे धातरन्तरित्याभिषेचितम् Nir. 2, 10. mit dem gen. der Sa-
che: प्राणस्य तदन्तरियात् ÇAT. Br. 6, 2, 2, 38. अन्तरितं अन्तरितं रत्नो ऽन्तरिता अन्तरितः TS. 1, 1, 8, 1. सामपीथादन्तरितः AIT. Br.
2, 22. — Vgl. अन्तरित, अन्तरय fig., अन्तराय. — intens. zwischen (zweien)
gehen, hindurchgehen als Bote, Vermittler u. s. w.: (सविता) उभे ध्या-
वापृष्टिवो अन्तरिष्यते R. V. 1, 33, 9. 160, 1. अन्तरिष्यमि इमं विद्वां ब्रह्मोभयां
कवे । हूतो ब्रह्मैव मिद्यं 2, 6, 7. हूत्यं चिकित्वा अन्तरिष्यते 4, 8, 4. 3, 3,
2, 6. 4, 2, 2, 3. 9, 86, 42.

— अय 1) act. weggehen, sich entfernen, sich wegmachen, entfliehen,
weichen, schwinden: अयेत् वीत R. V. 10, 14, 9. अयात् इत पाणयो वरीयः
108, 10. 1, 50, 2. 123, 7. 124, 8. 8, 55, 15. 56, 15. VS. 35, 1. यो अय स्तेन
अयाति स संपिष्टा अयायति AV. 4, 3, 5. 6, 20, 1. 83, 2. 10, 1, 10. 19, 49, 10.
ÇAT. Br. 5, 3, 4, 9. 11, 5, 5, 13. KĀTJ. Çr. 15, 4, 26. अयेत् मूर्ख MĀKĪ. 147,
5. आक्रन्दे चाप्यैहोति (! vgl. — परा und — प्र) M. 8, 292. JĀGŪ. 2, 298.
यावन्नपित्यमेधयाक्ताऽन्धः M. 5, 126. धर्मश्चापिति 1, 82. एनः 10, 111. JĀGŪ.
3, 226. लक्ष्मीश्चन्द्रापेयाद्वा R. 2, 112, 18. मन्युरपैतु ते 5, 53, 24. 3, 78, 9.
हृद्यात्प्रत्यदिश्वयलीकम् ÇĀK. 183. abgehen, fehlen: सत्त्वे निचिश्नते ऽपैति
(गुणाः) KĀT. bei P. II, p. 451. wegfallen: अयास्य बद्धपैति AIT. Br. 2, 11. R. V.
PRĀT. 10, 14. — 2) med. davongehen: तीव्रो रेणुरपयति R. V. 10, 72, 6. sich
aufmachen: यथा शेषो अयापयति स्त्रीषु चासदनायवाः AV. 7, 90, 3. — par-
tic. अयेत् entflohen, geschwunden, gewichen: कथमपि तस्मादपेतः er kam
mit genauer Noth von ihm los PAÑKAT. 91, 6. अयेतोदकधूमानि (वेष्मानि)
R. 2, 33, 20. अयेत्प्रजननाः स्वविरास्तदाख्याः KĀTJ. Çr. 22, 4, 7. LĀTJ.
in Ind. St. 1, 34, N. अयेतमीः M. 7, 197. अयेत्कामसंतापाः R. 2, 92, 6. भर्त-
रपेततन्मसि ÇĀK. 191. ऽसत्त्वहृदय DĪRTAS. 77, 4. R. V. PRĀT. 11, 12, 19.
der sich von Etwas entfernt hat, von Etwas abgefallen oder abgewichen
ist, einer Sache verlustig gegangen, frei von; die Ergänzung im abl.
oder im comp. vorangehend P. 2, 1, 38. धर्मसंतानात् Nir. 6, 19. धर्मयथात्
R. 2, 109, 32. सत्पथात् 4, 34, 35. धर्मात् MBh. 2, 1434. 3, 10244. सुखात् P.
2, 1, 38, Sch. अयव्यात् RAGH. 7, 67. वर्षापित M. 10, 57. जीवा° KūĀND. Up.
6, 11, 3. धर्मा° R. 2, 108, 1. सुखा° P. 2, 1, 38, Sch. स्मृत्यपेतादिकारिणाः
die unter Anderm den Rechtsbüchern entgegen handeln JĀGŪ. 2, 4. —
Vgl. अनपेत, अयाय fig.

— व्यप 1) auseinander gehen, sich trennen: यथा काष्ठे च काष्ठे च स-
मेयातो मरुद्दधौ । समेत्य च व्यपेयातो तद्द्रुतसमागमः ॥ MBh. 12, 868.
869 (= R. 2, 103, 24. GORR. 104, 12. Hit. IV, 66). — 2) weichen, schwin-
den, auflören: न खलु तदुपश्लेषादस्य व्यपैति रुचिर्मानाक् PRAB. 13, 7. त-
स्य व्यपैति ब्राह्मण्यं श्रद्धत्वं च स गच्छति M. 11, 97. व्यपैति ददतः (sc. पुत्रं)
स्वधा 9, 142. — partic. व्यपेत gewichen, geschwunden: ऽकल्मष M.
4, 260. 12, 18. ऽनदमत्सर JĀGŪ. 1, 267. ऽभी BHAG. 11, 49. ऽर्ह्य R. 5, 28,
12. PRAB. 117, 7. ऽघृणा AMAR. 12, 64. abweichend von: स्मृत्याचारव्यपे-
तेन मार्गिणा JĀGŪ. 2, 5.